फरीदाबाद
मजदूर समाचार
हर जगह, सब से, जब भी समय मिले

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **318** 1/- *दिसम्बर* **2014**

सात अरब में गोधूलि वेला का आगमन

कई जगह यह देखा है और इधर कुछ समय से यह इन्टरनेट पर, ई-मेलों से, फेसबुक पर, ब्लॉगों में एक चित्र के रूप में घूम रहा है। तस्वीर बिल बोर्ड की है, जिस पर दो पंक्तियाँ लिखी हैं :

कृपया यहाँ ज्ञान ना बाँटें।
यहाँ पर सभी ज्ञानी हैं।

यह प्रचारकों के दौर की समाप्ति की घोषणा है। यह सब के महत्व की मुखर अभिव्यक्ति है। पीढियों से विद्यमान सब के समान महत्व की सोच बल पकड़ रही है, व्यापक हो रही है। यह क्षमता, यह बल, यह व्यापकता सात अरब लोगों में घुल गई है, मिल गई है, रच-बस गई है। यह गोधूलि वेला का आगमन है।

गोधूलि वेला एक उपजाऊ टैन्शन है। गोधूलि वेला में क्षमता होती है दिन और रात के विभाजन के पार जाने की। गोधूलि वेला में मनुष्य और पशु के विभाजन के पार जाने की कल्पना विद्यमान रहती है। गोधूलि वेला में अन्दर और बाहर के विभाजन को असंगत बनाने का दम रहता है। गोधूलि वेला में जमीन और आसमान का भेद ध्वस्त हो जाता है।

गोधूलि वेला के कबीर कवियों ने कहा है :

देखो, पानी में लगी है आग,
समुद्र जल रहा है।
देखो, साण्ड ने गर्भ धारण किया है,
भैंस सफर पे चल पड़ी है,
हो के घोड़े पे सवार।

गोधूलि वेला में जो व्यवहारिक है वो अव्यवहारिक हो जाता है, और जो अव्यवहारिक है वो व्यवहारिक हो जाता है। अव्यवहारिक इच्छायें, आकांक्षायें, कामनायें, प्रवृतियाँ, भावनायें एक-दूसरे के साथ संवाद रच रही हैं। गोधूलि वेला सात अरब के नृत्य की वेला है। कोलाहल होने दो। ■

एक-दो-तीन रेखाचित्र

✶ आई एम टी मानेसर में सैक्टर-8 में प्लॉट 400 स्थित ***इन्ड्युरेन्स टैक्नोलोजीज*** फैक्ट्री में 850 मजदूर वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ***होण्डा, हीरो, सुजुकी*** दुपहियों के इन्जन कवर, सिलेन्डर, क्रैन्क केस, ग्रिप; ***मारुति सुजुकी*** वाहनों के ऑयल पैन और ***बॉश*** जयपुर के जरिये ***महिन्द्रा*** तथा ***टाटा*** वाहनों के डीजल पम्प; नोएडा में ***ग्रेजियेनो*** के लिये ट्रैक्टर कम्पोनेन्ट; थ्रोटल बॉडी आदि। इन्ड्युरेन्स कम्पनी की पुणे, औरंगाबाद, चेन्नै, गुजरात, रुद्रपुर आदि में 22 फैक्ट्रियाँ।

इन्ड्युरेन्स टैक्नोलोजीज फैक्ट्री में 156 स्थाई मजदूर और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 700 मजदूर सुबह 6½ से आरम्भ होती तीन शिफ्टों तथा एक जनरल शिफ्ट में अल्युमिनियम कास्टिंग-मशीनिंग का काम करते हैं। फैक्ट्री में 17 प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन, 96 सी एन सी, कनवेयर सिस्टम वाली पेन्ट शॉप, मेन्टेनैन्स-डाई मैन्टेनैन्स आदि हैं।

इन्ड्युरेन्स फैक्ट्री में 2009 से यूनियन है और 156 स्थाई मजदूर ही यूनियन के सदस्य हैं। पहला यूनियन-मैनेजमेन्ट दीर्घकालीन समझौता 2009 में हुआ और दूसरा 2012 में। यूनियन बॉडी के 7 लोग यूनियन का ही काम करते हैं और 25 स्थाई मजदूर लाइन लीडर हैं। स्थाई मजदूरों की तनखा 18 से 32 हजार रुपये और प्रोडक्शन इन्सेन्टिव पिछले वर्ष 1386 रुपये मासिक की औसत रहा। स्थाई मजदूरों को बोनस 8400 रुपये। पे-स्लिप में ओवर टाइम के घण्टे नहीं दिखाते, राशि ही लिखी होती है, पर भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से ही करते हैं।

ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर तनखा पर हैं। यह मजदूर मशीनें चलाते हैं और इनकी तनखा 5640 से 8500 रुपये है। इन मजदूरों को भी प्रोडक्शन इन्सेन्टिव मिलता है। लेकिन इन्हें बोनस नहीं देते। इनका महीने में 125 घण्टे के करीब ओवर टाइम होता है जिसका भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। पे-स्लिप में ओवर टाइम के घण्टे दिखाते हैं पर 100 घण्टे ओवर टाइम है तो पे-स्लिप में 50 घण्टे और भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं!

ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर पीस रेट पर हैं। यह मजदूर 12 घण्टे की शिफ्टों में फैटलिंग, बफिंग, मैल्टिंग, स्ट्रिपिंग जैसे गन्दे माने जाते कार्य करते हैं। ये कार्य भी प्रोडक्शन से सीधे जुड़े हैं पर इन्हें प्रोडक्शन इन्सेन्टिव नहीं देते। इन्हें भी बोनस नहीं देते। पे-स्लिप नहीं देते। आठ घण्टे बाद भी पीस रेट वही रहता है।

यूनियन-मैनेजमेन्ट के बीच समझौते में है कि कम्पनी की जरूरत के हिसाब से मजदूर स्थाई किये जायेंगे और स्थाई मजदूर बाहर से भर्ती नहीं बल्कि फैक्ट्री में कार्यरत 400 तनखा वाले अस्थाई मजदूरों में से ही वरिष्ठता से लिये जायेंगे। सन् 2009 में 78 स्थाई मजदूर थे और आज 156 हैं।

बगल की फैक्ट्री, ***अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स*** से निकाले गये 310 ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को इन्ड्युरेन्स यूनियन सहायता कर रही है।

✶ फरीदाबाद में 12/4 मथुरा रोड़ स्थित ***जगसन पाल फार्मास्युटिकल्स*** फैक्ट्री में अब 300 स्थाई मजदूर और स्टाफ के 40 लोग ही हैं। पाँच सुपरवाइजर थे, वे सब पिछले वर्ष रिटायर हो गये। अब यहाँ कोई कैजुअल वरकर नहीं है, ठेकेदारों के जरिये रखे कोई मजदूर नहीं हैं।

इस दवाई फैक्ट्री के उत्पाद, ***रिंग कटर*** का काफी नाम है। यहाँ रिंग कटर विभाग के अलावा इंजेक्शन विभाग, सीरप विभाग, कैपसूल विभाग, टेबलेट विभाग, केमिकल विभाग और स्टोर हैं। कम्पनी एक महीने से रिंग कटर रुड़की में बनवाने लगी है। एक वर्ष से ऊपर हो गया है इंजेक्शन विभाग के कार्य को करनाल और पानीपत में करवाते। टेबलेट विभाग का कार्य कम्पनी डेढ वर्ष से बद्दी, नालागढ, करनाल में करवा रही है। केमिकल विभाग में डी पी पी बनती थी जिस पर वर्ष-भर पहले सरकार ने रोक लगा दी। अब यहाँ कैपसूल विभाग में ही उत्पादन कार्य होता है।

जगसन पाल फार्मास्युटिकल्स की फरीदाबाद फैक्ट्री के 300 स्थाई मजदूरों को कम्पनी अकुशल श्रमिक कहती है, सब को हैल्पर ग्रेड देती है। ऑपरेटर, फिटर, 30-40 वर्ष से कार्यरत सब मजदूर अकुशल श्रमिक घोषित और तनखा 5640 से 8000 रुपये मात्र। जबकि, कम्पनी की काशीपुर और रुद्रपुर वाली नई फैक्ट्रियों में मजदूरों की तनखा 10 से 18 हजार रुपये है।

फरीदाबाद फैक्ट्री में अब सिर्फ जनरल शिफ्ट है। रविवारके संग शनिवार को भी मैनेजमेन्ट ने छुट्टी घोषित कर रखी है। सप्ताह के बाकी पाँच दिन केमिकल विभाग के 100 मजदूर फैक्ट्री में बैठ कर आते हैं। सीरप, रिंग कटर, टेबलेट, इंजेक्शन वाले मजदूर फैक्ट्री में बैठ कर आते हैं। कैपसूल विभाग के 25 और पैकिंग वाले 25 मजदूरों के लिये ही फैक्ट्री में उत्पादन कार्य है। बीस मजदूर 58 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं और इस वर्ष जनवरी में रिटायर होने थे पर मैनेजमेन्ट ने नवम्बर-अन्त तक उन्हें रिटायर नहीं किया है। जबकि, एक मिहला मजदूर को 55 वर्ष की होने पर रिटायर कर दिया और वह मामला श्रम विभाग में ले गई हैं।

फैक्ट्री मैनेजर दादागिरी करता है। कहता है कि जहाँ जाना है जाओ, कुछ नहीं होना। पचास वर्ष पार कर चुके मजदूरों को लगता है कि वे न तो मरने में हैं और न जीने में हैं।

✶ फरीदाबाद में सैक्टर-6 में प्लॉट11 स्थित ***ओरियन्ट इलेक्ट्रिक*** फैक्ट्री में फैन प्लान्ट में वर्ष में विभिन्न प्रकार के 80-90 लाख पँखे बनते हैं। यहीं सी एफ एल प्लान्ट में सी एफ एल बल्ब बनते हैं।

फैन प्लान्ट में 1163 मजदूर हैं जिनमें 52 स्थाई मजदूर हैं। स्थाई मजदूर दिन में ही काम करते हैं। स्थाई मजदूरों की बेसिक व डी.ए. 13,000-14,000 रुपये, मकान भत्ता 2150 रुपये, साइकिल भत्ता 500 रुपये, साबुन के लिये 50 रुपये। स्थाई मजदूरों को प्रति कार्य दिवस के लिये चाय भत्ते के 17 रुपये और ग्रेस इन्सेन्टिव के 400-500 रुपये प्रतिदिन के। महीने के 28-30 हजार रुपये। जब 11 लाख पँखे प्रतिवर्ष बनते थे तब 20 प्रतिशत बोनस का समझौता हुआ था जो 80-90 लाख पँखे बनने पर भी वही है। बोनस 8400 रुपये प्रतिवर्ष है। कैंटीन में भोजन स्थाई मजदूरों के लिये ही बनता है।

ओरियन्ट फैन प्लान्ट में 1100 के करीब कैजुअल वरकर और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर काम करते हैं। अस्थाई मजदूरों की तीन शिफ्ट हैं। स्थाई मजदूरों वाली दो असेम्बली लाइनें रात 8 से अगली सुबह 5 बजे तक अस्थाई मजदूर ही चलाते हैं। रात को भी पँखा असेम्बली की पाँचों लाइनें चलती हैं। अस्थाई मजदूरों की तनखा 5640 रुपये, अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन है (10-15 वर्ष से कार्यरत की थोड़ी-सी ज्यादा है)। अस्थाई मजदूरों को मकान भत्ता नहीं, साइकिल अलाउन्स नहीं, चाय भत्ता नहीं, ग्रेस इन्सेन्टिव नहीं। अस्थाई मजदूरों के लिये कैंटीन में भोजन नहीं बनता, जो बच जाता है वही वे ले सकते हैं। अस्थाई मजदूरों को बीस दिन कार्य पर एक सवेतन छुट्टी भी नहीं देते।

फैन प्लान्ट में अस्थाई मजदूरों की बढती हलचलों के कारण कम्पनी ने अस्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से देना शुरू किया। जबकि, सी एफ एल प्लान्ट में ओवर टाइम का भुगतान ओरियन्ट इलेक्ट्रिक कम्पनी अब भी सिंगल रेट से कर रही है।

फैन प्लान्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस नहीं देते। बोनस के लिये इन मजदूरों ने 20 अक्टूबर को काम बन्द किया तब साहबों ने काफी लल्लो-चप्पो की थी। इधर 10 नवम्बर को इन मजदूरों ने फिर काम बन्द किया तब मैनेजमेन्ट ने नवम्बर में बोनस दे देने की बात की थी। नवम्बर बिना बोनस निकल गया.....

अस्थाई मजदूर नौकरी तो छोड़ते रहते ही हैं, जब मन करता है तब छुट्टी भी कर लेते हैं। अनुपस्थितियों से कम्पनी परेशान। नये प्रोडक्शन मैनेजर ने 29 नवम्बर को फैन प्लान्ट के अस्थाई मजदूरों की मीटिंग ली। छुट्टी करने से रोकने के लिये साहब ने 1 दिसम्बर से 700 रुपये उपस्थिति भत्ता (और जो सिर्फ रात में काम करते हैं उन्हें 300 रुपये अतिरिक्ति) की बात की। मजदूरों ने अन्य बातें शुरू की तो साहब चलते बने।

और, बहुत अधिक रिजेक्शन से परेशान कम्पनी ने पँखा असेम्बली लाइनों पर जहाँ एक मजदूर लगता था वहाँ दो मजदूर लगा दिये हैं......

✶ *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*

✶ *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स के बहाने

वाहनों की इलेक्ट्रिकल इक्विपमेंट, वाशिंग मशीन आदि के इलेक्ट्रिक कन्ट्रोल बोर्ड, मोबाइल फोन के सर्किट बोर्ड, रोबोट्स के कन्ट्रोल आदि का उत्पादन करती अस्ती कारपोरेशन की 6 फैक्ट्रियाँ जापान में, 2 चीन में, 2 वियतनाम में, और एक फैक्ट्री प्लॉट 399 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर में है। अस्ती के ग्राहकों में सुजुकी, यामाहा, पैनासोनिक, टोयोटा, डेन्सो, कावासाकी, होण्डा, मित्सुबिशी, हिताची, सान्यो, कैनन, सोनी, रोलैण्ड, फुजित्सु, कोस्मो आदि कम्पनियाँ हैं।

आई एम टी स्थित अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री में अक्टूबर 2005 में उत्पादन आरम्भ हुआ। जनवरी 2014 में रात 2 बजे छूटती और रात 2 बजे आरम्भ होती जैसी तीन शिफ्टों में 480 मजदूर, जिनमें तीन-चौथाई महिला मजदूर थी। स्थाई मजदूर 130 थे और ठेकेदारों के जरिये रखे 350 तथा दोनों की तनखायें बहुत कम, 5500-6000 रुपये। जहाँ स्थाई और अस्थाई में फर्क कम होते हैं वहाँ मजदूरों में तालमेल स्वाभाविक तौर पर बढते हैं और फैक्ट्री स्तर पर आज की हालात में वास्तविक मजदूर संगठन उभरने लगता है। ऐसी स्थिति अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स में थी।

ट्रेड यूनियन की रजिस्ट्रेशन के लिये सरकार की फीस पाँच रुपये है। टाइपिंग और डाक खर्च सौ-दो सौ-तीन सौ रुपये। फैक्ट्री में रजिस्टर्ड यूनियन का सदस्य बनने के लिये स्थाई मजदूर होना कानून अनुसार जरूरी है। कैजुअल वरकर और ठेकेदारों जरिये रखे मजदूर फैक्ट्री ट्रेड यूनियन के सदस्य नहीं हो सकते अगर उस यूनियन का सरकार में रजिस्ट्रेशन है, अथवा रजिस्ट्रेशन करवाना है। स्थाई और अस्थाई मजदूरों के तालमेलों से उभरते वास्तविक मजदूर संगठनों को तोड़ने का फेर है यूनियन रजिस्ट्रेशन। इसके लिये कुछ गिरोह काम कर रहे हैं जो यूनियन के रजिस्ट्रेशन के लिये मजदूरों से दो-तीन-चार-पाँच लाख रुपये लेते हैं। यूनियन के रजिस्ट्रेशन से इस-उस चमत्कार की बातें बाबाओं के चमत्कारों जैसी तो हैं ही, यह अधिक खतरनाक भी हैं क्योंकि यह मजदूरों को कानून-विधान-संविधान के दलदल में भी डालती हैं। स्थाई और अस्थाई मजदूरों के जोड़ों से बनते वास्तविक मजदूर संगठनों को तोड़ने के लिये रजिस्टर्ड यूनियनें आज सरकारों तथा कम्पनियों के हाथों में एक धारदार औजार हैं। होण्डा में अस्थाई मजदूरों द्वारा स्थाई को ''पंच एण्ड लंच'' वाले कहना, अस्ती मजदूरों द्वारा ''परमानेन्ट मजदूर मुर्दाबाद'' के नारे लगाना आज फैक्ट्रियों में यूनियनों की वास्तविकता की एक झलक है।

अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री में यूनियन रजिस्ट्रेशन के लिये स्थाई और अस्थाई मजदूरों को इस वर्ष 7 फरवरी को तनखा मिली तब 1000-1000 रुपये प्रति मजदूर गुपचुप लिये गये। 18 फरवरी को स्थाई तथा अस्थाई मजदूरों ने मिल कर काम बन्द किया और कम्पनी को 2-3 निकाल रखे मजदूरों को वापस लेने को बाध्य किया। ऐसे में 7 मार्च को तनखा मिली तब हर मजदूर से यूनियन ने 500-500 रुपये और लिये। प्रभावित हुये कुछ मजदूरों ने तो 1000-1500 रुपये अतिरिक्त भी दिये।

अस्ती में यूनियन का रजिस्ट्रेशन हो गया। स्थाई मजदूरों से सदस्यता शुल्क लेना। अस्थाई मजदूरों से पैसे लेना बन्द। अप्रैल में यूनियन ने कम्पनी को माँग-पत्र दिया। स्थाई और अस्थाई की तनखाओं में बराबर बढोतरी की बातें, अस्थाई को स्थाई करने की बातें। अटपटी शिफ्टें बदली। बाकी सब जस का तस। स्थाई और अस्थाई मजदूरों में हलचलें बढने लगी तब यूनियन नेताओं ने मई-अन्त में कम्पनी पर दबाव डालने के लिये स्लो डाउन करने, उत्पादन कम करने को कहा। दस दिन बाद स्लो डाउन समाप्त करने को कहा। कम्पनी ने स्लो डाउन के दौरान ठेकेदार के जरिये 150 नये मजदूर भर्ती कर उन से रात को 12 घण्टे की शिफ्टों में उत्पादन करवाया। अन्ततः अगस्त में यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच तीन वर्षीय समझौता हुआ। स्थाई मजदूरों के वेतन में तीन वर्ष में 10,000 रुपये की वृद्धि — 4700, 2650, 2650 (अब तक वर्ष में 1500 से ज्यादा नहीं बढते थे)। अस्थाई मजदूरों की तनखा में 3900 की वृद्धि — 1300, 1300, 1300 (अब तक वर्ष में 500-1000 बढते थे)। हर वर्ष 35 अस्थाई को स्थाई करना..... इस-उस कुतर्क से 21 ही स्थाई किये। अस्थाई मजदूरों में असंतोष लेकिन बहुत ज्यादा नहीं — नपिनो ऑटो की तरह यूनियन लीडरों को पिटने से बचने के लिये भागना नहीं पड़ा।

स्थाई और अस्थाई मजदूरों में फर्क बढा। बाहर के तथा फैक्ट्री के यूनियन लीडरों की अस्थाई मजदूरों से दूरी बढी और कम्पनी से नजदीकी बढी। बन्द कमरों में योजना बनी और तैयारी हुई। ए-शिफ्ट छूटने के समय 1 नवम्बर को सब अस्थाई मजदूरों, 310 मजदूरों की नौकरी समाप्ति का नोटिस। एकमुश्त इतने मजदूरों को निकालने की कम्पनी की हिम्मत यूनियन पर भरोसे पर आधारित थी। रविवार बाद, 3 नवम्बर को सब अस्थाई मजदूर फैक्ट्री के बाहर और यूनियन के नेतृत्व में सब स्थाई मजदूरों ने फैक्ट्री में काम करना जारी रखा।

लेकिन अनगिनत चीजें हैं जिन्हें सरकारें और कम्पनियाँ भी अपने आंकलन में शामिल नहीं कर सकती। निकाले गये अस्थाई मजदूरों का सम्पर्क-सम्बन्ध कुछ अति सक्रिय लोगों से था। श्रम विभाग में 3 नवम्बर को शिकायत और 4 नवम्बर से 60 पुरुष तथा 250 महिला मजदूर फैक्ट्री के सामने बैठने लगे। अस्ती कम्पनी की योजना में यह एक फच्चर बना।

श्रम विभाग में तारीखें पड़ने लगी — 11 नवम्बर, 14, 17, 20, 24, 27 नवम्बर, 1 दिसम्बर...... कम्पनी 25 पुराने अस्थाई मजदूरों को तोड़ कर फैक्ट्री में ले गई और कुछ ने हिसाब भी ले लिया पर अधिकतर अस्थाई मजदूर डटे रहे। कम्पनी ने एक महीने की नोटिस पे देने की बात की, श्रम अधिकारी ने 2-3 महीने की....

अस्ती के अस्थाई मजदूरों ने 12 नवम्बर को मुंजाल किरियु फैक्ट्री के बाहर दो महीने से बैठे स्थाई मजदूरों के साथ आई एम टी मानेसर में प्रदर्शन किया। कई स्थानों पर 18 नवम्बर को अस्ती मजदूरों ने अपन पर्चा बाँटा और कई फैक्ट्रियों के यूनियन लीडरों से मिले। अस्ती फैक्ट्री के सामने 19 नवम्बर को गेट मीटिंग में कई यूनियन लीडरों ने खूब भाषण दिये। अस्ती यूनियन लीडर नहीं आये और उन्होंने 22 नवम्बर को साफ-साफ कह दिया कि वे कोई सहयोग नहीं कर सकते। दूसरी गेट मीटिंग 28 नवम्बर को और इसमें भी कई यूनियनों के लीडरों ने खूब भाषण दिये।

अन्य के अलावा कुछ छात्र और युवा भी अस्ती के अस्थाई मजदूरों को सहयोग देने और समर्थन जुटाने के लिये फैक्ट्री पहुँचे हैं, रात को भी साथ रहे हैं। श्रम विभाग में तारीखें, पर्चा-प्रदर्शन-मीटिंग में लीडरों के भाषणों से बात आगे नहीं बढती देख भूख हड़ताल करना तय हुआ। दो पुरुष तथा पाँच महिला मजदूरों ने 25 नवम्बर से अनिश्चितकालीन अनशन आरम्भ किया। समर्थन में हर रोज 5-10 अन्य लोग उनके साथ 24 घण्टे के अनशन पर बैठने लगे हैं। अनिश्चित काल के लिये भूख हड़ताल पर बैठे 7 स्त्री-पुरुष मजदूरों का अनशन 5 दिसम्बर को जारी था.....

श्रम विभाग में शिकायत। श्रम विभाग में तारीखें। प्रशासन को, सरकार को, अधिकारी को, विधायक-सांसद-मन्त्री को ज्ञापन। पुलिस अनुमति से दस-बीस दिन में प्रदर्शन अथवा सभा। पर्चे-पोस्टर। धरना। भूख हड़ताल। इन सब का असर पड़ता है पर इन से पड़ते प्रभाव को उल्लेखनीय मामलों में मजदूरों ने बार-बार अपर्याप्त पाया है। ईमानदारी और बेईमानी की बातें यहाँ अर्थहीन हो जाती हैं।

न्याय के नाम पर अथवा मजबूरी में उठाये जाते कदम प्रस्थान-बिन्दू बन सकते हैं पर स्वयं में ये बहुत आगे नहीं जाते। यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि 3 अक्टूबर 2003 को मुम्बई में टाटा समूह की कम्पनियों के मुख्यालय, बॉम्बे हाउस के सामने टाटा पावर के अस्थाई मजदूरों में से दो ने, अनन्त दलवी और अख्तर खान ने आत्मदाह कर प्राण त्याग दिये थे। आज चीन में फैक्ट्रियों में ऊँचाई से कूद कर मजदूर आत्महत्या करते हैं।

सार की बात मजदूर-पक्ष है। मजदूरों का मजदूरों के पास जाना इस दिशा में पहला कदम है। अलग-थलग फैक्ट्रियों की जगह आज हजारों फैक्ट्रियों के अगल-बगल में होने ने इसे बहुत आसान बना दिया है। एक फैक्ट्री के मामले को एक हजार फैक्ट्रियों का मामला बनाना मजदूर-पक्ष को ठोस आकार (शेष पृष्ठ चार पर)

मैनेजर ने बताया

एक पैर 32 इन्च का और दूसरा पैर 34 इन्च का के कारण बत्तीस हजार पैन्ट ***इण्डो ब्रिटिश गारमेन्ट्स*** फैक्ट्री वापस आ गइ (मजदूर समाचार सितम्बर अंक) वाली बात अच्छी लगी। ऐसा तो लगभग सभी फैक्ट्रियों में होता है, कस्टमर से माल वापस आना ही है। दिल्ली में ओखला फेज-3 में प्लॉट 54-56 स्थित ***प्रिसीजन पाइप्स*** फैक्ट्री में 2008 की बात है। लाइन चल रही थी, किसी ने सैटिंग बदल दी, या गलती से बदली गई। ऑपरेटर, सुपरवाइजर, इंजीनियर — किसी को मालुम नहीं कि गलत लम्बाई चल रही है। प्रोफाइल की लम्बाई छोटी चली। लम्बाई ज्यादा होती तो छोटी कर लेते, छोटी का क्या करें ? तीन दिन का उत्पादन रिजेक्ट हुआ।

ऐसा कई बार होता है कि सुपरवाइजर एक लाइन पर ज्यादा व्यस्त होता है। ऐसे में वह दूसरी लाइन को इसलिये चैक नहीं करता कि वह ठीक चल रही है। कम्पनी में कुछ सुपरवाइजर ऐसे हो जाते हैं जिनका काम के बारे में रुतबा होता है — ऐसे सुपरवाइजर के माल को इंजीनियर, मैनेजर चैक नहीं करते। माल रिजेक्ट हो कर आने पर मैनेजमेन्ट की गन्दी राजनीति शुरू हो जाती है : किसे बचाना है, किसे निकालना है।

कुप्रबन्धन, काम का बोझ, उबाऊ काम माल रिजेक्ट होने के कारण हैं। आठ-बारह घण्टे एक ही चीज करते रहें तो गलती तो होगी ही। डॉट-फटकार पर कई बार मजदूर जानबूझ कर भी ऐसा करते हैं। समाधान के तौर पर हर बॉक्स जो पैक होता है उसके अन्दर ऑपरेटर और हैल्पर का नाम लिखी पर्ची डालना..... अस्थाई मजदूरों की भरमार इसे अर्थहीन बना देती है। ऐसे में टॉप मैनेजमेन्ट अपने से नीचे वाली मैनेजमेन्ट पर और वह अपने से लोअर मैनेजमेन्ट पर दोष डालती हैं। मैनेजमेन्ट में एक दूसरी प्रवृति है मैनेजरों द्वारा अपने-अपने विभाग को बचाना और अन्य पर दोष मढना। उदाहरण के लिये, ऑटो कटर से आमतौर पर गड़बड़ नहीं होती लेकिन गति में किसी भी कारण से परिवर्तन होता है तो ऑटो कटर गड़बड़ करेगा। उपचार : डबल इन्सपैक्शन। यह काम भूसे में सूई ढूँढना है। यह सब से उबाऊ कामों में है और अकुशल श्रमिकों को, हैल्परों को इस में लगाते हैं। निन्यानवे दशमलव नौ प्रतिशत मानव 8 घण्ट भी इसे नहीं कर सकते, इसलिये डबल इन्सपैक्शन कारगर नहीं होता। दोष डबल इन्सपैक्शन वालों पर, सजा डबल इन्सपैक्शन वालों को।

अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स.... *(पेज तीन का शेष)*

देने की दिशा में बढना है। औद्योगिक क्षेत्रों में आठ-दस ऐसे स्थान होते हैं जहाँ से अनेकों फैक्ट्रियों के दसियों हजार मजदूर रोज आते-जाते हैं। अस्ती के बाहर किये अस्थाई मजदूर हों चाहे मुंजाल किरियु के बाहर किये स्थाई मजदूर, विशाल सँख्या में मजदूरों के आने-जाने की राहों पर सुबह की शिफ्टों के आरम्भ होने के समय दो घण्टे बीस-तीस मजदूरों द्वारा गत्तों पर अपनी बातें लिख कर एक-दूसरे से बीस-तीस गज की दूरी पर खड़ा होना बहुत आसान है। इस से रोज ही एक फैक्ट्री के मजदूरों की बातें हजारों फैक्ट्रियों में सहजता से होने लगती हैं। इस प्रकार सौ-दो सौ मजदूरों का मामला हजार-दस हजार-लाख मजदूरों का मामला बहुत आसानी से बनाया जा सकता है। फरीदाबाद में यह कारगर साबित हुआ है, ओखला औद्योगिक क्षेत्र में यह कारगर रहा है। आईये, रंग-बिरंगे बिचौलियों के, ईमानदार-बेईमान बिचौलियों के पार चलें।

निमंत्रण

दिसम्बर में 28 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल प ावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

बहुत हो चुका : मिलेंगे क्या ? देंगे क्या ?

बात लेने की है, लेने के लिये कदम उठाने की है

कम्पनियों द्वारा सार्वजनिक किये जाते बही-खातों की जाँच-पड़ताल का एक परिणाम यह है : फैक्ट्री में काम करती-करता प्रत्येक मजदू एक महीने में अठारह से बीस लाख रुपये का उत्पादन करता-करती है। और, दिल्ली के इर्द-गिर्द के क्षेत्रों में फैक्ट्री मजदूरों की तनखायें पाँच हजार से पचास हजार रुपये के दायरे में हैं। हम जो उत्पादन करते हैं उसका अठानवे-निन्यानवे प्रतिशत कहाँ जाता है? उसका क्या होता है ?

सरकारें न्यूनतम वेतन निर्धारित करती हैं। सरकारों के कानूनों के अनुसार जो तय की है उससे कम तनखा कम्पनियाँ नहीं दे सकती। लेकिन जहाँ देने वाली बात रहती है वहाँ निर्धारित न्यूनतम से कम तनखा देते हैं। और, जहाँ लेने वाली बात रहती है वहाँ हम फैक्ट्री मजदूरों को तीस-चालीस-पचास हजार रुपये तनखा लेते देखते हैं। इसलिये बात निर्धारित न्यूनतम वेतन से अधिक लेने की है। जो है उससे ज्यादा के लिये विचार करते और कदम उठाते समय यह ध्यान में रखना बनता है कि एक फैक्ट्री मजदूर आज एक महीने में बीस लाख रुपये का प्रोडक्शन करती-करता है।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अक्टूबर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 8632 रुपये मासिक (8 घण्टे के 332 रुपये)
अर्ध-कुशल श्रमिक 9542 रुपये मासिक (8 घण्टे के 367 रुपये)
कुशल श्रमिक 10,478 रुपये मासिक (8 घण्टे के 403 रुपये)
स्नातक और अधिक 11,414 रुपये मासिक (8 घण्टे के 439 रुपये)

हरियाणा सरकार द्वारा 1 नवम्बर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 7400 रुपये मासिक (8 घण्टे के 284 रुपये 61 पैसे)

अर्ध-कुशल ***अ*** 7770 रुपये मासिक (8 घण्टे के 298 रुपये 84 पैसे)

अर्ध-कुशल ***ब*** 8160 रुपये मासिक (8 घण्टे के 313 रुपये 84 पैसे)

कुशल श्रमिक ***अ*** 8570 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये 61 पैसे)

कुशल श्रमिक ***ब*** 9000 रुपये मासिक (8 घण्टे के 346 रुपये 15 पैसे)

उच्च कुशल श्रमिक 9450 रुपये मासिक (8 घण्टे के 363 रुपये 46 पैसे)

हल्का वाहन ड्राइवर 9000 रुपये मासिक (8 घण्टे के 346 रुपये 15 पैसे)

भारी वाहन ड्राइवर 9450 रुपये मासिक (8 घण्टे के 363 रुपये 46 पैसे)

गार्ड बिना शस्त्र 7770 रुपये मासिक (8 घण्टे के 298 रुपये 84 पैसे)

शस्त्र के साथ गार्ड 9000 रुपये मासिक (8 घण्टे के 346 रुपये 15 पैसे)

सेक्युरिटी सुपरवाइजर / इन्सपैक्टर/सेक्युरिटी अफसर 9450 रुपये मासिक (8 घण्टे के 363 रुपये 46 पैसे)

सफाई कर्मचारी 7900 रुपये मासिक (8 घण्टे के 303 रुपये 84 पैसे)

डाटा इन्ट्री ऑपरेटर 8570 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये 61 पैसे)

स्टाफ : दसवीं से कम 7770 रुपये मासिक (8 घण्टे के 298 रुपये 84 पैसे)
दसवीं पास पर स्नातक से कम 8160 रुपये मासिक (8 घण्टे के 313 रुपये 84 पैसे)

स्नातक और अधिक 8570 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये 61 पैसे)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।